B.A. –

Question पउमचरिउ की 23वी सन्धि का संक्षिप्त सारांश लिखिए।

Ans – महाकवि स्वयंभू देव रचयिता "पउम चरिउ" में राम कथा का वर्णन मिलता है। यह पाँच काण्डों में विभक्त है - विद्याधर काण्ड अयोध्या काण्ड, सुन्दर काण्ड युद्ध काण्ड एवं उत्तर काण्ड। कुल मिलाकर इसमें 90 संधियाँ है तथा इसकी कथानक का आधार रविसेण कृत "पद्मचरित है।

अयोध्या काण्ड भाग दो की 23वी संधि पठित पाठ का प्रतिपादित विषय है जिसमें कथा का प्रारंभ महाकवि स्वयंभू द्वारा आदरणीय ऋषभ देव को प्रणाम कर तथा अपने को अल्पमती कहकर पुनः राघवचरित को आरम्भ करने का संकल्प दुहराते है।

कथा का आरम्भ भरत को राज पट्ट बांध दिये जाने तथा राम के वन गमन से प्रारंभ होता है। राम के पिता दशरथ जी ने राम के वन गमन पर चिन्ता व्यक्त करते हुए तथा अपने आप को धिक्कारते हुए सत्य रूपी विवेक का सहारा लेते है और वे कहते है कि सत्य ही शास्वत है क्योंकि यदि मैं सत्य का पालन नहीं करता तो मैं अपने नाम और गोत्र को कलंकित करता। अच्छा हुआ राम वन गये और सत्य का नाश नहीं हुआ। सत्य सबकी तुलना में महान है। सत्य से सूर्य आकाश में तपता है, सत्य से ही समुद्र अपनी मर्यादा का उल्लंघन नहीं करता, सत्य से ही हवा प्रवाहित होती है, धरती तपती है। जो व्यक्ति सत्य का पालन नहीं करता वह राजा वसु की तरह झूठ बोलता हुआ नरक रूपी समुद्र मे गिर जाता है।

P.T.O

राम अपनी माँ अपराजिता के पास आकर भरत को सम्पूर्ण राज्य दे दिये जाने तथा अपने को वनवास होने का वर्णन कह सुनाते है। इस बात पर माता अपराजिता रोती हुई मूर्छित हो जाती है। माता को अनेक प्रकार से समझा-बुझाकर तथा सत्य की मर्यादा का पालन करते रहने का संकल्प लेकर माता से विदा लेते है। सीता देवी अपराजिता और सुमित्रा से आज्ञा लेकर भवन की शोभा का अपहरण करते हुए निकली जो राम के लिए दुःख का कारण तथा रावण के लिए वज्र के समान थी।

जैसे ही राम ने राजद्वार पर किया वैसे ही लक्ष्मण अपने मन में क्रोध हो उठे। आग बबुला होते हुए उन्होंने कहा कि राम के जीते जी दूसरा राजा कौन? आज ही भरत को पकड़कर राम को अपने हाथ से असमान्य राज्य दूँगा। आग बबुला होते लक्ष्मण के हाथ को पकड़कर राम ने कहा कि पिता के सत्य का नाश होने पर राज्य से क्या करना है

~~अब तक सोलह वर्ष है हम वनवास में~~

अपने पिता के आज्ञा के पालन करते हुए चौदह वर्ष के वनवास के लिए निकल पड़े। लक्ष्मण को बहुत बार समझाने के बाद भी लक्ष्मण ने राम के साथ जाने का आग्रह करने लगा। तब श्रीराम ने लक्ष्मण को जाने का आदेश दिया।

तब राम, सीता, लक्ष्मण वन के लिए राम ने परिजन बन्धु बान्धवों से मिलते हुए वन के लिए प्रस्थान करते है। यहीं पर कवि सूर्यास्त और रात्रि का बड़ा ही सजीव वर्णन किया है। रास्ते में सिंहकुर भवन अर्थात भुवनेश्वर का भवन था जिसके चारों ओर महा वृक्ष दिखलाई पड़ रहे थे जो मानो ऐसा लगता

था कि संसार के भय से भयभीत होकर वे ब्रह्म
जिनवर के शरण में चले गये हैं वहाँ पहुँच कर
वन गामी राम ने जिनवर की वन्दना की और तीन
बार प्रदक्षिणा देकर वे तीनों वन के लिए चल दिये
रात्री की बेला में चन्द्रमा की चन्द्रिका छिपती हुई
थी। उस स्थिति में सांसारिक कामातुर सुरति में
आसक्त प्राणिमपुष्टी आशंका से अपने स्नेह को छिपा
लिए। कुछ दूरी पर जाने के बाद तरुवरों ने
नमस्कार किया। पंछी की चहचहाहट से मानो
ऐसा लगा कि वे बन्दीपाठ कर रहे हैं।

प्रभात की बेला में राम अपने शौप बलसे घिरे
हुए तथा बार-बार वन्दना किये जाते हुए,
दिग्गज की तरह पारियात्र देश पहुँचे। यहाँ से
थोड़ी ही दूरी पर महानदी दिखाई दी। यहाँ पर
कवि ने गंभीर महानदी का बड़ा ही मनमोहक
और भयंकर वर्णन किया है। यहाँ से राम अपनी
समूची सेना को यह कहते हुए लौटा देते हैं
कि अयोध्या छोड़कर हमलोग दक्षिण देश और
वनवास के लिए जायेंगे। इस प्रकार कहकर
राम सागरावर्त और वज्रावर्त धनुष हाथ में लिए
हुए समर में समर्थ सीता को बायें हाथ पर
लेकर उस गंभीर नदी को पार कर जाते हैं।

जो सैनिक पीछे लगे हुए थे उनमे कुछ दुख से
दुखित होकर वापस आ गये। कुछ केश लोंचकर
(लोचकर) प्रवर्जित हो गये। कुछ श्रेष्ठ पुरुषोत्तम जो
रण में उत्तम थे प्रधान जिनवर के चरणों को नमस्कार
कर संयम नियम और गुणों से आबद्ध वहीं स्थित हो
गये। पउमचरिउ की 23वीं संधि की कथानक
त्याग, संयम वैराग्य भावना पर आधारित है।